उत्तरमाला

मेरे बचपन के दिन

1.लेखिका को लेखन कार्य की प्रेरणा दो लोगों से मिली। पहले थीं -उनकी माँ जो बचपन में लिखती थी और पद गाया करती थी। दूसरीप्रेरणा थी- सुभद्रा कुमारी चौहान, जिनकी देखा देखी वह खड़ी बोली में लिखने लगी।

2. लेखिका की मां धार्मिक विचारों के महिला थी।वह जबलपुर से आई थीं और अपने साथ हिंदी और संस्कृत भाषा को भी लेकर आई ।वह सुबह- शाम मीरा के पद गाती। उसी ने लेखिका को पंचतंत्र भी पढ़ना सिखाया।

3. आनंद भवन में बापू के आने पर छात्राएँ अपने बचाए जेब खर्च को स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष हेतु दे दिया करती थीं ।लेखिका भी पुरस्कार में मिले नक्काशीदार सुंदर कटोरे को लेकर बापू को दिखाने गई और बापू के द्वारा मांगने पर उसने खुशी-खुशी वह कटोरा उन्हें दे दिया।

4. महादेवी वर्मा को छात्रावास में रहने के लिए जो कमरा मिला, उसमें तीन छात्राएँ और भी रहती थीं । उन्हीं में से एक सुभद्रा कुमारी चौहान थी। वह लेखिका से 2 साल बढ़ी थी । वह उस समय कविताएँ लिखा करती थीं ।उन्हीं से प्रेरित होकर महादेवी वर्मा ने भी खड़ी भाषा में लिखना शुरू कर दिया।

5.' मेरे बचपन के दिन 'पाठ में लेखिका महादेवी वर्मा ने अपनी स्मृतियों के सहारे कई रोचक घटनाओं का वर्णन किया है । पाठ का उद्देश्य तत्कालीन परिस्थितियों से आने वाली पीढ़ी को अवगत कराना था ।तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति का चित्रण किया है । उसने अपने शिक्षित परिवार तथा घर के धार्मिक वातावरण का भी चित्रण किया है। उस समय देश में सांप्रदायिकता के लिए जगह न थी। सभी छात्राएं एक साथ हिंदी- उर्दू पढ़ती थी और एक साथ खाना खाती और एक ही साथ प्रार्थना करती थीं ।वे राष्ट्रीय आंदोलन में भी अपना भरपूर योगदान करती थीं। जवारा के नवाब की पत्नी तथा लेखिका की मां के सद्भावना पूर्ण मेल-जोल आज की सांप्रदायिक भावना पर चोट करते हैं।

6.लेखिका महादेवी वर्मा ने जिन दिनों का वर्णन किया है, व दिन समाज में एकता एवं भाईचारे बनाए रखने तथा सांप्रदायिक सद्भाव बढ़ाने वाले थे ।इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, बेगम साहिबा और महादेवी के परिवार के बीच आपसी संबंध ।एक परिवार मुस्लिम और दूसरा हिंदू होने के बाद भी वे एक- दूसरे के उत्सव और त्योहार मिल जुलकर मनाते थे ।एक- दूसरे के धर्म ,रीति- रिवाज और परंपराओं का आदर करते थे। त्योहार पर दोनों परिवारों के बच्चों के कपड़े एक जैसे बनाना ,एक दूसरे को उपहार देना तथा किसी भी तरह का भेदभाव न करना यह दर्शाता है कि उस समय सांप्रदायिकता ना थी।

बच्चे कम पर जा रहे हैं

1. बच्चों का काम पर जाना भयप्रद इसलिए है क्योंकि बच्चे पढ़ने- लिखने और खेलने -कूदने की उम्र में काम पर जाने के लिए विवश हो रहे हैं। हम बच्चों को मूलभूत सुविधाएं नहीं दे पा रहे हैं ।यह उनके मौलिक अधिकारों का हनन है।

2. बच्चों की दयनीय दशा पर प्रश्न खड़ा हो रहा है कि समाज उनका काम पर जाता देखकर संवेदनहीन बन गया है। वह तनिक भी विचलित नहीं होता ।लोगों के लिए यह एक साधारण सी बात बन गई है ।बच्चों का नष्ट होता बचपन और उनका नष्ट होता भविष्य देखकर समाज को तनिक भी दुख नहीं है। समाज की यह संवेदनहीनता तथा तटस्थता को देखकर कवि कोबहुत पीड़ा होती है।

3. इस कविता में कवि ने बच्चों के काम पर जाने की समस्या को प्रमुखता से उभारा है और प्रश्न किया है कि ऐसे कौन से कारण है जिनके कारण बच्चों को कम पर जाना पड़ रहा है ।समाज के लोग यह सब देखकर भी चुप क्यों है? कवि को समाज की यह संवेदनहीनता और भाव शून्यता भयंकर लगती हैं ।कवि समाज को जागरूक करना चाहता है, ताकि समाज के सभी लोग मिलकर बच्चों को पढ़ने- लिखने और खेलने- कूदने के अवसर प्रदान करे ताकि यही बाल- मजदूर कल के सुयोग्य नागरिक बन सके।

4. कवि के अनुसार बचपन स्वच्छंद और बाधाओं से रहित होना चाहिए, जिसमें बच्चों को पढ़ने- लिखने और खेलने -कूदने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए ।समाज के लोगों की यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे बच्चों को काम करने से रोके और इनका छिनता बचपन लौटाए, ताकि वे अच्छे नागरिक बनकर अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें।

5. कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि बच्चों का काम पर जाना है समाज की भयंकर समस्या है ।पर समाज और समाज के तथाकथित ठेकेदार इस समस्या को देखकर भी अनदेखा कर रहे हैं, मानो उनके लिए बच्चों पर काम पर जाना कोई नई बात नहीं है।